www.anvikshikijournal.com

ISSN 0973-9777
वर्ष - 7 अंक - 5
सितम्बर-अक्टूबर 2013
GISI Impact Factor 0.2310

वर्ष - 7 अंक - 5 सितम्बर-अक्टूबर 2013

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. एवं आन्वीक्षिकी
सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित

मनीषा प्रकाशन

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल, डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. एस. पी. उपाध्याय, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. विशाल अशोक आहेर, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ, डॉ. (श्रीमती) विभा चतुर्वेदी, डॉ. नीलमणि प्रसाद सिंह, डॉ. प्रेम चन्द्र यादव, डॉ. रामनिवास पटेल, डॉ. एच. एन. शर्मा, डॉ. संगीता जैन, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, विनय कुमार पटेल, अर्चना बलवीर, खगेश नाथ गर्ग, मुन्ना लाल गुप्ता

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान), डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजुकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत : भारतीय 5000+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 1200+100/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क व्यक्तिगत : 3,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 1200+100 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है,अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387, टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com

मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन : महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

प्रकाशन :एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

प्रकाशन तिथि : 1 सितम्बर 2013

मनीषा प्रकाशन

(पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008 बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया, लंका वाराणसी उ.प्र. भारत)

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष-7 अंक-5 सितम्बर-2013

शोध प्रपत्र

रामायण का ऐतिहासिक महत्व -सुषमा 1-3
आर्थीनामकशब्दवृत्ति -संदीप पाण्डेय 4-7

कृषिविज्ञान का वर्णन : वेदों के संदर्भ में -डॉ. बी. जे. पटेल एवं प्रा. नयना सी. पटेल 8-13
विनोदशंकर शुक्ल : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य -डॉ. रमेश टण्डन 14-17

नयी कविता : शिल्प एवं संवेदना -डॉ. शारदा शर्मा 18-19
जर्मेन ग्रीयर का स्त्री विमर्श (द फीमेल यूनक के संदर्भ में) -डॉ. प्रभा दीक्षित 20-25

प्रेमतत्व के व्याख्याता : कबीर -डॉ. बी. जे. पटेल एवं प्रा. नयना सी. पटेल 26-30
शिवमंगल सिंह 'सुमन' : एक विहंगावलोकन -डॉ. आरती बंसल 31-35

जैनेन्द्र कुमार की स्वतंत्रता सेनानियों व क्रांतिकारियों पर आधारित कहानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण -डॉ. दीप्ति गौड़ 36-40
वैज्ञानिक चेतना धार्मिक उन्माद और साम्राज्यवाद -डॉ. प्रभा दीक्षित 41-44

मध्यकालीन रचनाओं में स्त्री सशक्तिकरण के स्वर -डॉ. अंशुमाला मिश्रा 45-48
मंचीय एवं विचार कविता के मध्य एक सशक्त सेतु : भवानी प्रसाद मिश्र -डॉ. प्रभा दीक्षित 49-53

बंजारी सूर्य मंदिर मिश्रितकला शैली का अनुपम प्रतीक -डॉ. खगेशनाथ गर्ग 54-58
उच्च गांगेय क्षेत्र की ताम्रनिधियाँ : मानवाकृति के विशेष संदर्भ में -सरला राय 59-64

बिहार में जाति और लोकतंत्र : सिद्धान्तों के आईने में -अमृता कुमारी 65-68
राजनैतिक अस्थिरता : कारण और निदान -डॉ. निशा झा 69-71

शिक्षा का व्यवसायीकरण, अधिकार और उन्नति : कितना सफल और कारगर -अंजना कुमारी 72-75
संगीत में ताल का महत्व -अरुप चटर्जी 76-78

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2013) **7,69-71**
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 14 अगस्त 2013

राजनैतिक अस्थिरता : कारण और निदान

डॉ. निशा झा*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *राजनैतिक अस्थिरता : कारण और निदान* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र की लेखिका मैं *निशा झा* घोषणा करती हूँ कि लेखिका के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेती हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देती हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देती हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देती हूँ।

आज समाज एवं राज्य जैसी संस्थाएं परिवर्तनकाल से गुजर रही है। राज्य की इकाइयों का व्यवहार लोकतांन्त्रिक आस्थाओं पर एवं मापदण्डों पर खरा होना चाहिए; जैसे-जैसे शासन व्यवस्था विकेन्द्रित होती है, व्यवस्था में प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है। प्रत्येक व्यक्ति के विकास में किसी दूसरे का विकास बाधक नहीं हो, इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए व्यवस्था की जरूरत होती है, ताकि मूल्यों का न्यायोचित वितरण हो। व्यवस्था स्थापित करने के लिए शक्ति का अर्जन राजनीति कहलाती है।

राजनीतिक विकास

जी. ए. सेवाइन ने History of political theory में निष्कर्ष निकाला है, कि शक्ति अर्जन का सिद्धान्त में *आदर्शवाद* के स्थान पर *पार्टी व्यवहार* प्रमुख हो जाता है। शक्ति का प्रयोग व्यवस्थाएं अलग-अलग तरीके से करती हैं। मैक्स बेवर, जार्ज कैटलीन, हेराल्ड लासवेल तथा राबर्ट डहल आदि विचारकों ने राजनीति को संघर्ष के रूप मे देखा है। जार्ज कैटलीन के अनुसार ''समस्त राजनीति स्वभावतः शक्ति एवं संघर्ष से संबन्धित है।'' मैक्स बेवर के अनुसार ''राजनीति का अर्थ लोगों को प्रभावित करने की कला है।'' राज्यों के बीच चलने वाले संघर्ष अथवा राज्य के भीतर विभिन्न समुदायों के बीच होने वाले संघर्ष दोनों ही राजनीति के अन्तर्गत आ जाते हैं।

मेक्सबेवर की परिभाषा से स्पष्ट होता है, कि राजनीति का शक्ति के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। राजनीति में विभिन्न समूह अपने लिए अधिक से अधिक लाभ एवं सुविधाएं अर्जित करने के प्रयास में लगे होते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद समाजवादी देशों की संख्या बढ़ी। विकासशील देशों ने स्वतंत्र आर्थिक विकास के लिए अपने बाजार तथा निवेश क्षेत्रों को आरक्षित किया। साथ ही लैटिन अमेरिकी एवं अफ्रीकी देशों के हालात खराब होने से बड़े पूंजी वाले देशों की दृष्टि भारत पर लगी। यहाँ का विशाल जनक्षेत्र, प्राकृतिक संसाधन, एवं उपभोक्ताबाजार उन्हें लालच देने लगा कि वे विशालपूंजी लगाकर यहाँ भारी मुनाफा कमा सकें। योजनानुसार भारत को व्यावसायिक ऋण लेने बाध्य करना, सीमा पर दबाव बढाकर एवं आन्तरिक

* प्राचार्या, शासकीय महाविद्यालय कसडोल (छत्तीसगढ़) भारत

© लेखक 2013, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

अशान्ति को शह देकर विकास के लिए उपलब्ध वित्तीय संसाधनों को कम करवाना, विदेशी खिलौने, सौन्दर्यप्रसाधन, सौन्दर्य प्रतियोगिताएं का बाजार तैयार करना जैसे हथकण्डे अपनाये जाने लगे। लासवेल और कैटलिन ने अलग अलग राजनैतिक व्यवहार का अध्ययन कर स्पष्ट किया कि मूल्यों के न्यायोचित वितरण से राजनैतिक व्यवस्था में अस्थायित्व का खतरा पैदा होने लगता है।

स्थायी राजनैतिक व्यवस्था

विरोध का आधार भय होता है। शक्ति के हस्तान्तरण के भय से ग्रस्त भारतीय राजनैतिक दल आधुनिकता एवं परम्परा को परस्पर विरोधी सिद्ध करके अपना वर्चस्व बचाते हैं। रिचर्ड रोज का अध्ययन यह सिद्ध करता है, कि ब्रिटेन की शासन व्यवस्था के स्थायित्व का रहस्य उसकी परम्परावादी व्यवस्था है।

कोई भी आधुनिक विचारधारा प्रारम्भ में प्रबल नहीं होती, अतः उसे प्रतिस्थापित होने का भय होता है जो उसे परम्परा विरोधी बनाती है। निर्बल और आधारहीन परम्पराएं ही प्रतिस्थापित होने के भयवश आधुनिकता का विरोध करती हैं। तर्कसंगत सुदृढ परम्पराएं अथवा विकासोन्मुखी आधुनिकता प्रतिस्थापित होने के भय से मुक्त होने के कारण विरोध नहीं करतीं। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ आधुनिक विचारों को भी परंपरा के अंग के रूप मे प्रस्तुत कर अपनी शासन व्यवस्था को स्थायित्व और अपने संविधान को परम्परावादी छवि प्रदान करते हैं।

दबाव समूहों का व्यवहार

भारतीय समाज का मध्यमवर्ग सर्वाधिक सक्रिय एवं बहुसंख्यक है जो पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन एवं अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न व्यवसायों के अनुसार जातियों, धर्मों, संघों, श्रमिक संगठन, कर्मचारी संघ, महिला संघ, किसान संगठन, क्षेत्रीय राजनैतिक दलों के माध्यम से अपने हित के लिए दबाव समूहों का निर्माण करते हैं। इनकी तुष्टिकरण के चलते राजनैतिक निर्णय लोककल्याणकारी नहीं बल्कि उस संघ या संगठन के हितों तक सीमित होने के कारण अन्य समूहों के विकास में बाधक होते हैं। अतः राजनैतिक व्यवहार अराजकता जैसा प्रतीत होने लगता है।

राजनीतिक ह्रास

हटिंगटन ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है, कि विकासशील देशों में हिंसा, अस्थिरता सत्तावाद, भ्रष्टाचार इतने अधिक प्रभावी हो जाते हैं, कि विकास की बात तार्किक आदर्शवाद में उलझ कर रह जाती है।

लुसियन पाई एवं सिडनी वर्वा की Political culture and development के अनुसार किसी देश में यदि जनचर्चा ''लोकतन्त्र की बाधाएं'' लोकतन्त्र का भविष्य'' विकास कार्यों को जनसमर्थन दिलाने के उपाय'' जैसे विषयों पर होती है, तो उसे विकसित अथवा विकासशील माना जाये। इसके विपरीत नवोदित एवं अविकसित देशों में नागरिकों के बीच चर्चा की रुचि के विषय राजनेताओं के वक्तव्यों पर केन्द्रित होते हैं। कौन से जनप्रतिनिधि ने कौन सी बात कितने प्रभावी ढंग से कही है ?

लुसियन पाई एवं सिडनी वर्वा की तुलनात्मक मापनी किसी देश विशेष के सन्दर्भ में नहीं बल्कि सैद्धान्तिक एवं सर्वेक्षण आधारित है। इस मापन में हम अपने देश को न तो विकसित और न ही विकासशील पाते हैं। अतः भारतीय लोकतन्त्र के स्थायित्व के प्रति हम सुनिश्चित नहीं हैं।

निष्कर्ष

1 वाहवाही प्राप्त करने एवं ताली बजवाने वाले वक्तव्यों से राजनैतिक स्थिरता प्राप्त नहीं होती। तात्कालिक लाभ पाकर कुछ ऊपर जा सकते हैं, किन्तु स्थायित्व का अभाव नीचे पटक देता है। जनप्रतिनिधि इसका ध्यान रखें।

2. किसी वर्ग विशेष को संतुष्ट करने की दृष्टि से लिए गये निर्णय, कई समूहों को असंतुष्ट करते हैं। अतः राजनैतिक निर्णय सर्वजन हिताय हों, वर्ग विशेष के लिए सीमित नहीं हों।
3. तर्कसंगत, प्रयोग द्वारा प्रमाणित आधुनिकता एवं सुदृढ़ उपयोगी परम्परा स्वीकार्य हो। आधारहीन परम्पराओं, एवं अनुकरण द्वारा प्रचलित आधुनिकता से दूर रहा जाय।

सन्दर्भ

डॉ. आर एन.त्रिवेदी एवं डा.एम.पी.राय -भारतीय राजनीतिक व्यवस्था
डॉ. आर.एन. त्रिवेदी -भारतीय सरकार एवं राजनीति
डॉ. प्रभुदत्त शर्मा -प्रमुख राजनैतिक व्यवस्थाएं
हरीष चन्द्र शर्मा -आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त
डॉ. प्रभुदत्त शर्मा -तुलनात्मक राजनीतिक संस्थाएं
पत्र -पत्रिकाएं : दिनमान, इंडिया टुडे, दैनिक भास्कर।

लेखकों के लिए निर्देश

शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

शीर्षक :शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

सारांश :कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

पाण्डुलिपि :इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

पुस्तक :प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

पत्रिका :पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

समाचार पत्र :प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

इण्टरनेट :वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्त: शीर्षक।

मानचित्र एवं सारणी :मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

विशेष :कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पोरेट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

IJRA

www.onlineijra.com

ISSN 0973-9777

09739777

₹ 1200/-